रिपोर्ट

सप्तम डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति व्याख्यान

ARTISANS AT QUARRY AND WORKSHOP: EARLY STONE CARVING ART OF MIDDLE GANGA PLAIN

(3 अप्रैल, 2023)

आदि दृश्य विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
नई दिल्ली

रिपोर्ट

सप्तम डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति व्याख्यान

भारतीय इतिहास में अनेकों विद्वानों के नाम सुनहरे अक्षरों में लिखे गए हैं जिन्होंने राष्ट्र के प्रति अपने कार्यों से एक अलग पहचान बनाई। ऐसे ही एक विद्वान हुए डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर, जिन्होंने अभेद पहाड़ियों में जाकर विशालकाय चट्टानों पर चित्रित हमारे पूर्वजों के निशानों (शैलचित्रों) से हमें परिचित कराया। डॉ0 वाकणकर एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातत्त्ववेत्ता महान कला साधक थे। कला संकृति के प्रति उनकी रूचि किसी से छुपी नहीं थी, और इसी रूचि के परिणामस्वरूप वर्ष 1957 में भीमबेटका नामक पुरास्थल की खोज डॉ0 वाकणकर द्वारा की गई। भारतीय इतिहास में भीमबेटका पुरास्थल की खोज को एक नए युग की शुरुआत माना जाता है इसकी खोज से हमारे पूर्वजों व हमारी संस्कृति के काल को लेकर जो वैचारिक संशय इतिहासकारों के मध्य था उसपर भी विराम लगा। वर्ष 2003 में भीमबेटका को युनेस्को द्वारा विश्वदाय पुरास्थल की सूची में शामिल किया गया। जो भारत का एकमात्र पुरास्थल है जो विश्वदाय पुरास्थल की सूची में भी उल्लेखित है। पुरातत्त्व क्षेत्र में इन्ही उपलब्धियों के कारण डॉ0 वाकणकर को शैलचित्र कला अध्ययन का *पितामह* भी कहा गया। उनके इस उत्कृष्ट कार्य के लिए तत्कालीन भारत सरकार द्वारा उन्हे *पद्मश्री* पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आदि दृश्य विभाग प्रत्येक वर्ष 3 अप्रैल को अपने स्थापना दिवस के रूप में मनाता है तथा डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर जी की स्मृति में व्याख्यान का आयोजन करता है। दिनाँक 3 अप्रैल, 2023 को इस व्याख्यानमाला की कड़ी में सप्तम् डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति व्याख्यान का आयोजन सम्वेत सभागार, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली में किया गया।

सप्तम् डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर स्मृति व्याख्यान की वक्ता प्रो0 विदुला जायसवाल (आर0 सी0 शर्मा पीठ, ज्ञान प्रवाह, सी0 सी0 एस0 आर0) थी जिनका व्याख्यान विषय "ARTISANS AT QUARRY AND WORKSHOP: EARLY STONE CARVING ART OF MIDDLE GANGA PLAIN" था। कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में प्रो0 किशोर कुमार बासा (अध्यक्ष, राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण), मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 सच्चिदानंद जोशी (सदस्य सचिव, इं0 गाँ0 रा0 क0 के0), साथ ही केंद्र के न्यासी श्री वासुदेव कामथ तथा आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 रमाकर पंत भी उपस्थित थे।

व्याख्यान कार्यक्रम के साथ ही केंद्र के दर्शनम 1 में "चंदौली की शैलकला" विषय पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। उक्त प्रदर्शनी सितंबर, 2022 में चंदौली, उत्तर प्रदेश में विभाग द्वारा शैलकला अभिलेखन के दौरान चित्रकारों द्वारा किए गए पेंटिंग्स पर आधारित थी। प्रदर्शनी में चंदौली के शैलकला पुरास्थल का विहंगम दृश्य, विषयांकन, नृजातीय अध्ययन से संबंधित पेंटिंग्स का प्रदर्शन किया गया था। प्रदर्शनी का उद्घाटन केंद्र के न्यासी श्री वासुदेव कामथ द्वारा प्रो0 विदुला जायसवाल, प्रो0 किशोर कुमार बासा, डॉ0 सच्चिदानंद जोशी तथा डॉ0 रमाकर पंत की गरिमामयी उपस्थिती में किया गया।

व्याख्यान कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ0 रमाकर पंत (विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य विभाग) के स्वागत भाषण से हुआ। डॉ0 पंत ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए विभाग की स्थापना के 10 वर्ष पूर्ण होने पर सबको बधाई दी तथा इन वर्षों में विभाग द्वारा किए गए मुख्य कार्यों के बारे में अतिथियों को अवगत कराया। डॉ0 रमाकर पंत ने अपने वक्तव्य में आगे कहा कि आदि दृश्य विभाग द्वारा समय समय पर अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता रहा है, ज्ञातव्य है कि अधिकांश प्रकाशन शोध अध्ययन को दृष्टि में रखकर किए गए हैं किन्तु इस वर्ष विभाग द्वारा एक नई पहल "डिस्ट्रिक्ट रॉक आर्ट सिरीज" के रूप में की गई है जिसके अंतर्गत देश के विभिन्न राज्यों के विभिन्न जनपदों में पाए जाने वाले शैलचित्रों के आधार पर प्रत्येक जनपद पर पुस्तिका का प्रकाशन किया जाएगा। इसमें मुख्य रूप से इस बात का ध्यान रखा गया है कि विषय की भाषा को सामान्य तथा स्थानीय रखा जाए जिससे आम जनमानस अधिक से अधिक इससे जुड़ पाए और जान पाए कि उनके आस पास पाए जाने वाले यह चित्र जिन्हे अभी तक सामान्य दृष्टि से देखा जाता था, वह सामान्य चित्र नहीं बल्कि उनके पूर्वजों कि स्मृति, उनके संदेश उन चित्रों में समाहित है।

इस शृंखला कि पहली पुस्तक चंदौली जनपद की शैलकलाः एक परिचय" का विमोचन भी इस कार्यक्रम में किया गया तथा इसके साथ चार अन्य शोध पुस्तकें *प्रागैतिहासिक पश्चिमी हिमालय–पार की*

उत्कीर्णित तथा चित्रित शिलाएँ, Affinities and Expansion of Prehistoric and Archaeological Cultures in Northeast India – With Special Emphasis on Rock Art, Rock Art of Central India – With Special Reference to Madhya Pradesh, Seventh Dr- Vishnu Shridhar Wakankar Memorial Lecture का विमोचन भी किया गया।

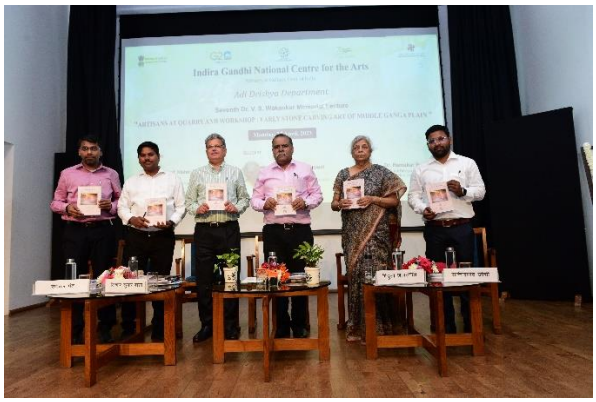

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ0 सच्चिदानंद जोशी (सदस्य सचिव, इं0 गाँ0 रा0 क0 के0) ने अपने आतिथ्य भाषण में सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम में विमोचित विभाग की पाँच पुस्तकों को विभाग की बड़ी उपलब्धि बताया, उन्होने कहा आदि दृश्य विभाग का कार्य शोध/फील्ड ओरिएंटेड कार्य है और उन्ही शोध कार्यों पर आधारित वर्ष भर में पांच पुस्तकें प्रकाशित करना वाकई एक सराहनीय कार्य है। आगे उन्होने कहा की शैलचित्र कला किसी भी देश या समाज के लिए उनकी सभ्यता का बोध कराने वाला प्राचीनतम दृश्य विषय में से एक है। डॉ0 जोशी ने अपने वक्तव्य के अंत में विभाग को शुभकामाएं देते हुए इस बात को रेखांकित किया और कहा "मैं आदि दृश्य विभाग की पूरी टीम, और मैं यह बात स्पष्ट करना चाहता हूँ की जब हम टीम की बात कर रहे हैं तो यह कोई बहुत बड़ी टीम नहीं है कुल मिलाकर तीन लोगों का एक समूह है जिसके द्वारा इतनी सारी गतिविधियाँ संचालित की जा रही है, तो कम संसाधनों में कोई काम कैसे अच्छा किया जा सकता है इसका भी उदाहरण आज आदि दृश्य विभाग ने पेश किया है"।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में आदि दृश्य विभाग द्वारा निर्माणाधीन "रॉक आर्ट ऑफ चंदौली" वृत्तचित्र तथा "रॉक आर्ट ऑफ ग्वालियर" वृत्तचित्र के ट्रेलर का विमोचन किया गया।

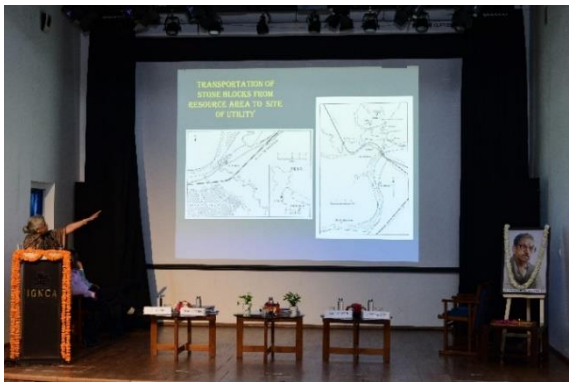

कार्यक्रम को गति देते हुए कार्यक्रम की वक्ता प्रो0 विदुला जायसवाल द्वारा व्याख्यान प्रारम्भ किया गया। प्रो0 जायसवाल इतिहास एवं पुरातत्त्व विषय के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तरीय विदुषी है तथा उनके द्वारा लिखे गए लेखों से देश विदेश के लाखों शोधकर्ता

लाभान्वित होते हैं। प्रो0 जायसवाल मध्य प्रदेश सरकार द्वारा स्थापित विष्णु श्रीधर वाकणकर सम्मान से सम्मानित है।

प्रो0 जायसवाल ने अपने व्याख्यान में भीमबेटका पुरास्थल के उत्खनन के समय डॉ0 वाकणकर के साथ भीमबेटका में हुई शिष्टाचार भेंट का उल्लेख करते हुए डॉ0 वाकणकर के कार्य के विषय में अवगत कराया।

इसके पश्चात प्रो0 जायसवाल ने मौर्य एवं कुषाणकालीन मूर्ति निर्माण केंद्र प्रस्तर मूर्तियों के लिए कच्चा माल कहाँ से प्राप्त होता था, मूर्तियों को बनाने वाले शिल्पकारों, मूर्तिकला के विकास एवं मूर्ति निर्माण के तकनीक आदि के विषय में विस्तृत रूप से बताया। व्याख्यान के दौरान विश्वविद्यालयों/संस्थानों के छात्र व शोधकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। शोधकर्ताओं के भाव से यह ज्ञात हो रहा था कि यह व्याख्यान उनके लिए कितना महत्वपूर्ण व ज्ञानवर्धक रहा।

व्याख्यान पश्चात प्रो0 बासा ने अपने अध्यक्षीय भाषण दिया उन्होने आदि दृश्य विभाग द्वारा किए जा रहे अनवरत कार्यों की सराहना करने के साथ ही विभाग को भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। प्रो0 बासा ने प्रो0 जायसवाल को विद्वतापूर्ण एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान के लिये एवं IGNCA को व्याख्यान के आयोजन के लिय धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के अंत में मो0 जाकिर खान (परियोजना सहायक, आदि दृश्य) ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रमोद कुमार
परियोजना/निजी सहायक
आदि दृश्य विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र